दैनिक जागरण पृ० 17
7-4-16

भूजल के बारे किसानों को मिलेगी सटीक जानकारी

दै०जा० पृ० 17

- सरकार ने दी नेशनल हाइड्रोलॉजी परियोजना को मंजूरी
- परियोजना के लिए 3,679.76 करोड़ रुपये का किया आवंटन

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : लगातार दो साल मानसून की बेरुखी के चलते सूखे की भयंकर स्थिति के मद्देनजर सरकार ने 3679.76 करोड़ रुपये की नेशनल हाइड्रोलॉजी परियोजना को मंजूरी दी है। इस परियोजना के तहत सरकार नेशनल वाटर इंफॉर्मेटिक्स सेंटर (एनडब्ल्यूआइसी) की स्थापना करेगी। इस योजना के अमल में आने के बाद किसानों को भूजल के बारे में सही सूचना मिल सकेगी। इससे वे अपने खेत के पास पानी की उपलब्धता के आधार पर फसल का चुनाव कर सकेंगे। साथ ही बाढ़ की भविष्यवाणी भी तीन दिन पहले की जा सकेगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक में नेशनल हाइड्रोलॉजी परियोजना को मंजूरी दी गई। यह परियोजना केंद्रीय क्षेत्र में होगी। इसके तहत बनने वाले एनडब्ल्यूआइसी के लिए सरकार ने 39.76 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की है। कैबिनेट के फैसले की जानकारी देते हुए संचार मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि इस परियोजना के तहत पहले सिर्फ 13 राज्य आते थे, लेकिन अब इसके दायरे में सभी राज्य आएंगे। इस परियोजना के तहत न सिर्फ जलाशयों के प्रबंधन और रखरखाव तथा बाढ़ की सटीक भविष्यवाणी पर जोर दिया जाएगा बल्कि नदी बेसिन प्रबंधन की रीति अपनाकर जलवायु क्षेत्र के आधार पर जल प्रबंधन किया जाएगा। इससे गांव के स्तर पर भूजल के तर्कसंगत तरीके से उपयोग को प्रोत्साहन भी मिलेगा। इससे जल की गुणवत्ता के बारे में भी सूचना मिल सकेगी। खास बात यह है कि इसके तहत नियमित तौर पर किसानों को भूजल के बारे में ताजा जानकारी मिलेगी जिससे वे अपनी फसल बोने का फैसला उसी आधार पर कर सकेंगे।

कैबिनेट के फैसले के अनुसार नेशनल हाइड्रोलॉजी परियोजना के लिए आवंटित 3679.76 करोड़ रुपये में से आधी धनराशि विश्व बैंक से लोन के रूप में होगी जिसे भारत सरकार चुकाएगी। शेष आधी राशि केंद्र सरकार बजट के माध्यम से देगी। परियोजना के पूरी तरह लागू होने पर बाढ़ की भविष्यवाणी के अलावा बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की मैपिंग भी की जा सकेगी। इसके अलावा इसमें स्मार्ट शहरों के लिए जलापूर्ति और नदी जोड़ो परियोजना पर भी फोकस होगा।

दैनिक जागरण, पृ० 6 7-4-16

तुलसी, बरगद व जामुन की पत्तियां हैं कारगर

दै०जा० पृ० 6

रणविजय सिंह, नई दिल्ली

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर इस बार डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने कई जानलेवा बीमारियों का कारण बन रहे मधुमेह को परास्त करने का नारा बुलंद किया है। बृहस्पतिवार को दिल्ली सहित देशभर में मधुमेह की रोकथाम व इससे लोगों को जागरूक करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। ऐसे मौके पर राहत भरी खबर यह है कि तुलसी, बरगद व जामुन की पत्तियों का मिश्रण मधुमेह टाइप-2 के इलाज में कारगर है। आइआइटी खड़गपुर व दिल्ली स्थित नेताजी सुभाष इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के विशेषज्ञों ने मिलकर तीनों की पत्तियों के मिश्रण से एक ऐसा फाइटो कंपोजिट तैयार किया है, जिससे मधुमेह की दवा बनाई जा सकेगी। इससे एलोपैथिक (अंग्रेजी) दवाओं पर निर्भरता कम होगी। इस शोध में शामिल विशेषज्ञों का कहना है कि मधुमेह की एलोपैथिक दवाओं का दुष्प्रभाव अधिक होता है। मधुमेह ऐसी बीमारी है जिसे दवाओं से सिर्फ नियंत्रित किया जा सकता है। इसलिए उसकी दवाएं जीवन भर लेनी पड़ती हैं। एलोपैथिक दवाओं के दुष्प्रभाव के कारण मरीजों में मोटापे की समस्या होती है। इसके अलावा पेट संबंधी परेशानी भी होती है। ऐसे में हर्बल दवाओं को बढ़ावा दिया जाना जरूरी है। क्योंकि औषधीय पौधों से बनी दवाओं का दुष्प्रभाव नहीं होता। यह पहले से माना जाता रहा है कि मधुमेह में तुलसी, बरगद और जामुन की पत्तियां फायदेमंद हैं। इस अध्ययन में विशेषज्ञों ने पाया कि तुलसी, बरगद और जामुन की पत्तियों का मिश्रण मधुमेह के इलाज में अधिक कारगर है। नेताजी सुभाष इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी के बायोटेक्नोलॉजी विभाग के वरिष्ठ शोधकर्ता राजीव कुमार सिंघला ने कहा कि औषधीय पौधों का वैज्ञानिक आधार साबित करने के लिए यह शोध शुरू हुआ है और नतीजे बेहतर आ रहे हैं। इस शोध की मुख्य शोधकर्ता वैशाखी डे (आइआइटी, खड़गपुर) ने बताया कि जामुन, बरगद व तुलसी की पत्तियों को सूखाकर पाउडर बनाया गया। उसे अलग-अलग अनुपात में मिलाकर चूहों पर शोध किया गया। अध्ययन में पाया गया कि 1:1:2 के अनुपात में तैयार मिश्रण मधुमेह के इलाज में ज्यादा प्रभावी है। इसमें तुलसी की मात्रा अधिक रखी गई थी।

देश में 66 लाख लोग मधुमेह से पीड़ित : विशेषज्ञों का कहना है कि देश में करीब 66 लाख लोग मधुमेह से पीड़ित हैं। जीवनशैली में बदलाव और खानपान में वसा युक्त भोजन के अधिक इस्तेमाल से मधुमेह की बीमारी बढ़ रही है। इसे ध्यान में रखते हुए ऐसा इलाज ढूंढना जरूरी है जो किफायती और फायदेमंद हो। साथ ही दवा का दुष्प्रभाव भी न के बराबर हो।

7-4-16
प्रभारी, समाचार पत्र कटिंग
पुस्तकालय